

## न्यूयार्क टाइम्स के साथ गवर्नर का साक्षात्कार\*

### भारत के केंद्रीय बैंक प्रमुख ने संकट के बाद किए गए प्रयासों की आलोचना की

रघुराम जी. राजन, गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक अपनी स्पष्टवादिता के लिए जाने जाते हैं। वे अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के पूर्व मुख्य अर्थशास्त्री रह चुके हैं और उन्होंने पूरी दुनिया के केंद्रीय बैंकों की इस बात के लिए आलोचना की है कि वे उनके निर्णयों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों पर विचार करने के बजाय अपने घरेलू मामलों के बारे में अधिक ध्यान दे रहे हैं।

भारत में, हाल के महीनों में ओवरनाइट ब्याज दरों में कटौती न करने के उनके रुख ने उन्हें विवादों के घेरे में खड़ा कर दिया था, जिसमें उन्होंने अंततः बृहस्पतिवार को एक-चौथाई कमी करते हुए 7.75 प्रतिशत कर दिया था। समालोचकों का मानना है चूंकि तेल की कीमतें लड़खड़ा रही हैं, इसलिए उन्हें मुद्रास्फीति से जूझने की चिंता कम अपितु विकास की दर को और तेज करने की थी।

बुधवार को अपराह्न में अपने विस्तृत साक्षात्कार में श्री राजन ने वित्तीय बाजार में केंद्रीय बैंकों की भूमिका पर बात की और यह बताया कि उन्हें भारत में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। केथ ब्रेडशेर को दिए गए साक्षात्कार के संपादित मुख्य अंश इस प्रकार हैं।

**• अप्रैल में दिए गए आपके भाषण में खासतौर से यह आह्वान था कि केंद्रीय बैंकों में और अधिक समन्वय हो तथा मात्रात्मक सहजता पर नियंत्रण रखा जाए - औद्योगिक देशों में आर्थिक विकास की गति की पुनः जीवित करने के प्रयोजन से वहां के केंद्रीय बैंकों द्वारा बड़े पैमाने पर बाण्डों की खरीद के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जबकि ब्याज दरें और मुद्रास्फीति की दर शून्य स्तर को छू रही हैं:**

“मेरा यह मानना है कि औद्योगिक राष्ट्र अपने देश के भीतर इतना अधिक ध्यान दे रहे हैं कि वे इस बात के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग चाहते हैं कि संकट के दिन जैसी घटना कभी न घटे, उसके अलावा चाहे जो भी, और यह संभवतः बहुत ही अच्छी सोच है। ये सब प्रयास-जिसे सटीक शब्दों में कहा जाए-तो चिंतन को संवेदी बनाना है। और मेरा विचार है कि मेरे भाषण में उस प्रकार का प्रभाव था।

\* डॉ. रघुराम जी. राजन, गवर्नर का न्यूयार्क टाइम्स के केथ ब्रेडशेर द्वारा लिया गया साक्षात्कार। न्यूयार्क टाइम्स में 16 जनवरी, 2015 को पहली बार प्रकाशित।

“वस्तुतः कई लोगों ने मेरे भाषण का यह भी आशय निकाला कि मात्रात्मक सहजता का सरोकार काफी हद तक विनिमय दरों से है . . . . . बजाय ढेर सारी घरेलू गतिविधियों को वास्तव में ऊर्जास्वित करने से। मैं समझता हूँ कि इस प्रकार का विचार मेरे उन विचार से और भी व्यापक है जिसके बारे में मैंने बात करना प्रारंभ किया था।

“किंतु, इसमें मेरे विचार से खास बात यह है कि इससे फायदा यह हुआ कि कम से कम लोग जागरूक हुए कि जब भी संकट जैसा समय आए, जब भी बाजार की अस्थिरता किसी स्थान पर संकट पैदा करे, तब यह जरूरी है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रणाली आगे आए और उस समस्या को रोके। आप जानते ही हैं कि मैं यह चाह रहा था कि हम एक ऐसी प्रणाली कायम करें जो संकट से पहले की हो, किंतु, यदि संकट के बाद की प्रणाली स्थापित करना है तो हमें यह तो सुनिश्चित करना ही होगा कि हम प्रत्येक चीज का यथोचित रूप से कुशलतापूर्वक चयन करें।

“हो सकता है, कि इस परिदृश्य में हम सबसे ज्यादा यही उम्मीद कर सकते हैं, जिसके लिए विभिन्न राजनीतिक तंत्र से काफी मांग रही है कि इसके बाहर देखने की न तो कोई गुंजाइश थी न ही उसकी ऊर्जा शेष थी और यह कहते हैं कि “इससे अधिक और क्या घटित हो सकता था?”

**• आपकी चिंता यह है कि केंद्रीय बैंकों ने अर्थव्यवस्थाओं और वित्तीय बाजारों को आघात सहने के लिए काफी हद तक गुंजाइश प्रदान कर रखी है:**

“मैं कुछेक बाजार सहभागियों के बारे में बात कर रहा था, और वे बहुत ही कम समय में बाजार में उत्पन्न होने वाली अस्थिरता की गंभीरता के प्रति चिंतित थे, जिसका एक उदाहरण तेल की कीमतें हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि यह बहुत ही गहरा बाजार है। और रातोंरात वाकई में एक रात में, या फिर एक या दो महीने में इसकी कीमतें 100\$ प्रति बैरल से घटकर 50\$ प्रति बैरल हो गईं।

“अब, आप ही देखें कि ऐसा क्या घटा कि इस प्रकार का परिवर्तन हो गया? क्या 100\$ की दर बहुत अधिक थी? या फिर 45\$ की दर बहुत कम थी? या फिर संभावित दर की कोई रेंज थी? और इसके बाद यदि आप सोचते हैं कि यह आस्ति इतना ज्यादा बढ़ सकती है, और हां डालर का मूल्य बढ़ा है - क्या हम आस्तियों के मूल्यों में आगे बहुत अधिक अस्थिरता देख सकेंगे?

“यही चिंता है, और यही चिंता मैं पिछले कुछ दिनों से व्यक्त करता रहा हूँ। अर्थात् क्या केंद्रीय बैंकों ने इन नीतियों के माध्यम से अस्थिरता को दबा दिया है।

“कारगर तरीके से, प्रत्येक बार कीमतें काफी हद तक बढ़ी हैं, और कुछ केंद्रीय बैंक या अन्य लोग यह कहते हैं कि - ‘थोड़ी प्रतीक्षा करो, थोड़ी प्रतीक्षा करो, हम आप को नये सिरे से चलनिधि प्रदान करने जा रहे हैं’ और हम बाजार को निश्चित रूप से विक्रय विकल्प देंगे। इसलिए यह न तो, बर्नानके का विक्रय-विकल्प है और न ही ग्रीनस्पैन का विक्रय-विकल्प। क्या हमने अस्थिरता को जड़ से खत्म करने की कोशिश की है - नहीं की गई है, और मैं समझता हूँ इसकी कोशिश करना किसी भी केंद्रीय बैंक का सीधा उद्देश्य है, लेकिन परोक्ष रूप से हम ऐसी स्थिति में आ गए हैं - जहां हमने और अधिक अस्थिरता का खतरा पैदा कर लिया है।”

**• भारत में प्रमुख बैंक विनियामक के रूप में आपके आग्रह पर, यदि बड़ी कंपनियां फेल होती हैं तो उसके नुकसान को उन कंपनियों के निर्माताओं को जबरदस्ती वहन करना होगा, साथ ही उनके कारोबार हेतु लिए गए ऋण के लिए संपार्श्विक के प्रावधान को भी खोना होगा:**

“यहां हमारा प्रयास यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रणाली को निष्पक्ष बनाना होगा, अर्थात् बड़े लोगों को भी भरपाई करनी होगी, और यदि वह भरपाई नहीं कर पाते तो उधार देने वाले के पास उसकी

वसूली के लिए ठोस अधिकार होने चाहिए। इस समय इसी मुद्दे पर कार्य किया जा रहा है। लेकिन, यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि पूरी प्रणाली को न्यायसंगत बनाया जाए।

“पूँजीवाद के बारे में एक चिंता इसकी बात है कि ‘सिर अर्थात् पूँजीपति की जीत होती है, और पूँछ वाले हिस्से के सिस्टम की हार होती है, किंतु पूँजीपति की हर समय मौज रहती है। एक उपयुक्त पूँजीपति प्राप्त करने के लिए बल्कि मैं इस प्रकार से कहूँ कि, एक मुक्त उद्यम हासिल करने हेतु - इस देश की प्रणाली में हमें निश्चित रूप से ऐसे लोगों की जरूरत है जिनमें जोखिम उठाने की क्षमता हो। लेकिन, यदि वे जोखिम उठाते हैं तो उन्हें जोखिम उठाने की लागत तो चुकानी ही होगी, बजाय इसके कि जोखिम की चुकौती हो जाने के बाद वे केवल फायदा उठाएं, किंतु, जब जोखिम की चुकौती नहीं होती है तो वे उस लागत को किसी और पर डाल देते हैं।

“और पिछले कुछ महीने से सारा ध्यान इसी बात पर दिया जा रहा है: कि हमें किस प्रकार से ऐसे बड़े प्रवर्तक मिलें जो नुकसान को आत्मसात कर लें और उसे बैंकों पर न डालें ? और हम इस बात को कैसे सुनिश्चित करें कि हमारी प्रणाली हर किसी के लिए समान तरीके से कार्य करें?”